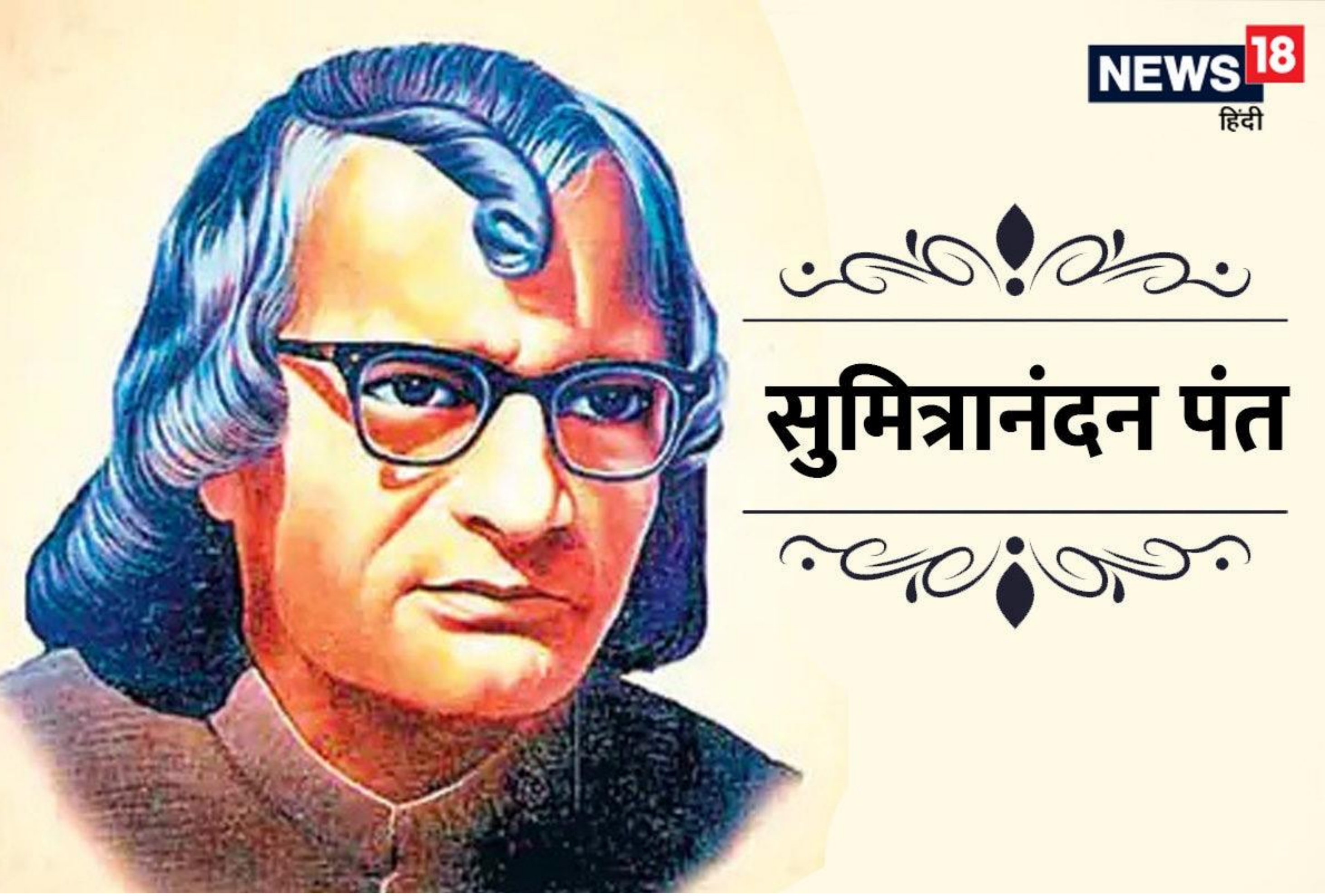
NEWS18
हिंदी
सुमित्रानंदन पंत

अहा धरती कितना देती है
सुमित्रानंदन पंत
NEP
III sem BCA/BSc(FAD)
काव्यानन्द
Annotation & Qu & Ans
BANGALORE UNIVERSITY

सुमित्रानन्दन पन्त

पन्त का जन्म हिमालय की
गोद में बसे उत्तरांचल प्रदेश
के कौसानी ग्राम में २० मई
सन् 1900 ई. को हुआ था।
29 दिसम्बर, सन् 1977 ई. को
इनका निधन हो गया।

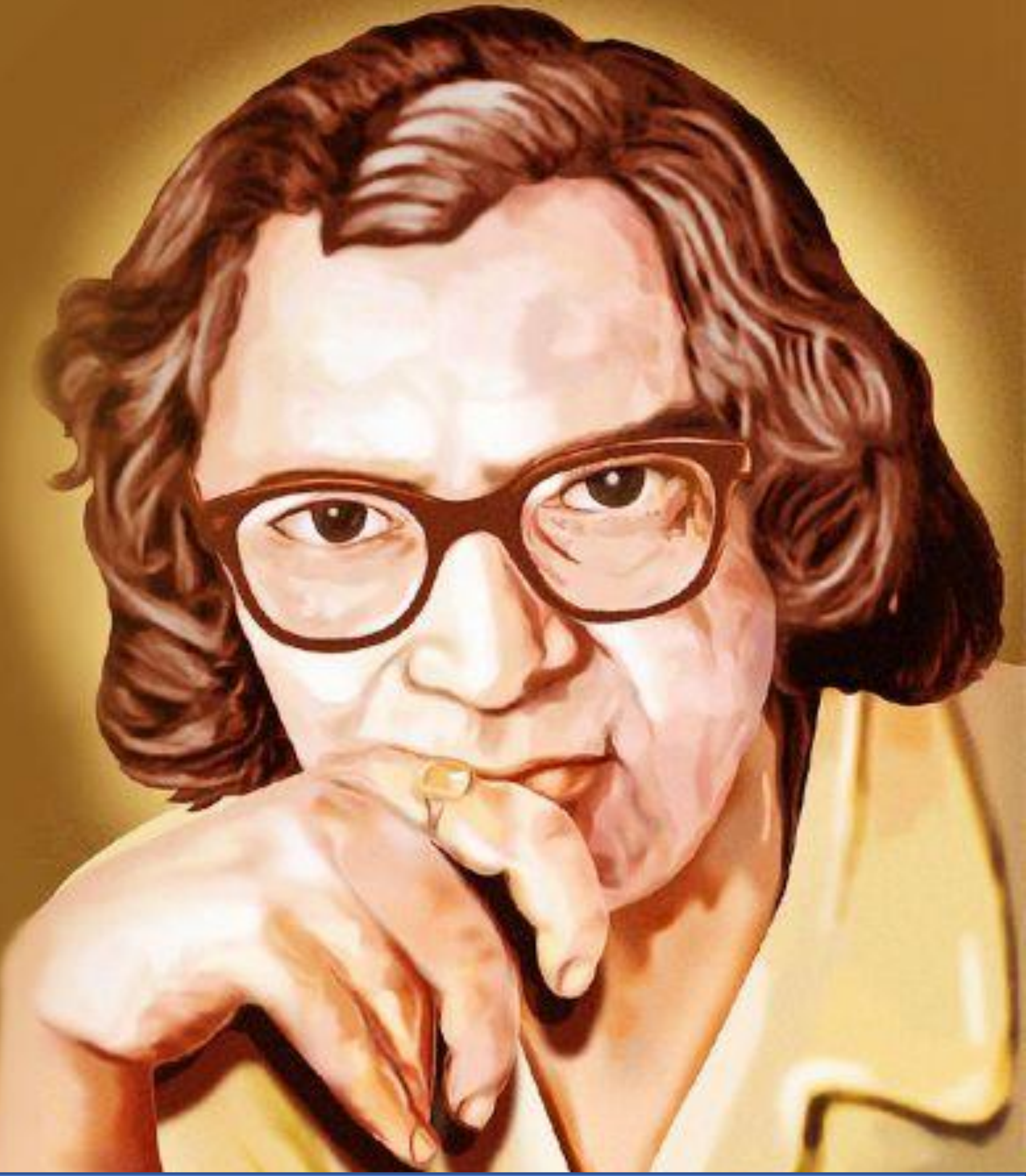

read more in detail

Dr. Sonia Rathi Assistant Professor

आः धरती कितना देती है

Aa dharti kitna deti hai

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल फलकर मै मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी नें न एक भी पैसा उगला!-
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये!
मैं हताश हो बाट जोहता रहा दिनों तक
बाल-कल्पना के अपलर पाँवडडे बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था!

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने धरती की ऊपजाऊ शक्ति के बारे में बताया है कि जिस प्रकार धरती में जो बोया जाए वही प्राप्त होता है उसी प्रकार हम जो कर्म करते हैं हमें वैसा ही फल मिलता है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि मैंने बचपन में छिपकर धरती में कुछ पैसे बो दिए थे, यह सोचकर कि इससे पैसों के पेड़ उग आऐंगे और रुपयों, पैसों से भरी फसलें खनकेंगी और मैं धनवान् सेठ बन जाऊँगा परन्तु बंजर धरती में एक भी बीज़ नहीं फूटा जो सपने मैंने देखे थे वह सब मिट्टी हो गए और मैं परेशान होकर कई दिनों तक प्रतीक्षा करता रहा कि अब पैसों के पेड़ उगेगें कि अब! बचपन की कल्पना में मैं अपने पलकों रूपी पाँव बिछाकर, अनजान बालक यह नहीं जानता था कि मैंने गलत बीज बोए हैं|

The poet says that in my childhood, I had secretly sown some money in the earth, thinking that money trees would grow from it and crops full of money and money would flourish and I would become a rich merchant, but not a single seed sprouted in the barren earth which could grow in dreams. All the things I had seen had turned to dust and I was worried and waited for many days to see whether the money trees would grow or not! In my childhood imagination, by spreading my feet in the form of eyelashes, the unknown child did not know that I had sown the wrong seeds.

ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।
अर्धशती हहराती निकल गयी है तबसे।
कितने ही मधु पतझर बीत गये अनजाने
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूलीं, शरदें मुस्काईं
सी-सी कर हेमन्त कंपे, तरु झरे, खिले वन।
और जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिये
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि के मनोभावों का चित्रण किया गया है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि मैंने उन पैसों को बड़ी ममतामय भावना के साथ बोया था और लालसा के भाव से उसे सींचा था भाव उस पेड़ से पैसे प्राप्त करने के लालच में मैंने उसको रोपा था। तब से लगभग 50 वर्ष बीत गए हैं कितने ही बसंत और पतझड़ के मौसम बीत गए, कितनी ही गर्मी की ऋतु, सर्दी की ऋतु, सर्द बर्फीली सर्दी बीत गई। काँप-काँप कर सर्दी बीत गई, वर्षा ऋतु समाप्त हो गई, वृक्ष के पत्ते झड़ गए फिर से वन हरे-भरे हो गए भाव मौसम बदलते रहे, आते रहे, जाते रहे और जब भी काले बादल धरती पर बरसे तब भी मेरे मन से लालसा नहीं गई मैं उन पैसों के पेड़ों के उगने की लालसा को लेकर बैठा रहा। कि शायद अब पैसों के पेड़ उग जायेंगे भाव मनुष्य की लालसा, कभी समाप्त नहीं होती, वह निरन्तर बढ़ती ही रहती है।

The poet says that I had sown that money with a very loving feeling and had watered it with a feeling of longing; I had planted it in the greed of getting money from that tree. Since then almost 50 years have passed, so many spring and autumn seasons have passed, so many summer seasons, winter seasons, cold snowy winters have passed. The winter passed with a shiver, the rainy season ended, the leaves of the trees fell, the forests became green again, the emotions kept changing, the weather kept changing, kept coming, kept going and whenever dark clouds rained on the earth, still from my mind I did not crave for it

मैंने कौतूहलवश आंगन के कोने की
गीली तह को यों ही उंगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे।
भू के अंचल में मणि माणिक बांध दिए हों।
मैं फिर भूल गया था छोटी सी घटना को
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन।
किन्तु एक दिन, जब मैं संध्या को आंगन में
टहल रहा था, तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से।
देखा आंगन के कोने में कई नवागत
छोटी छोटी छाता ताने खड़े हुए हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि के जीवन की एक अन्य घटना का वर्णन मिलता है।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि एक दिन मैंने उत्साह में आँगन के कोने में गीली मिट्टी को सहलाकर उसके नीचे सेम के कुछ बीज दबा दिए। तब मानों मैंने धरती के नीचे बहुमूल्य रत्नों को बाँध दिया हो भाव धरती ऊपजाऊ है वह बीज़ों के बदले आपको फल-फूल का भण्डार देती है। और बाद में मैं इस घटना को भूल गया कि मैंने धरती के नीचे कुछ बोया है। और बात भी ऐसी नहीं थी कि उसे मैं याद रखता। परन्तु एक दिन जब शाम को मैं आँगन में टहल रहा था, तो अचानक मैंने देखा और मैं हैरानी एवं खुशी से भर गया कि आँगन के कोने में छोटे-छोटे नन्हें पौधे खड़े थे सिर पर छाता को ताने भाव मैंने जो धरती में बीज बोए थे आज उन्होंने पौधों का रूप ले लिया।

The poet says that one day in excitement I caressed the wet soil in the corner of the courtyard and buried some bean seeds under it. Then it is as if I have tied precious gems under the earth. The earth is fertile, it gives you a storehouse of fruits and flowers in exchange of seeds. And later I forgot this incident that I had sown something under the earth. And it wasn't such a thing that I could remember it. But one day when I was walking in the courtyard in the evening, suddenly I saw and was filled with surprise and joy that in the corner of the courtyard there were small plants.

छाता कहूं कि विजय पताकाएं जीवन की;
या हथेलियां खोले थे वे नन्हीं, प्यारी -
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिम्ब तोडकर निकले चिडियों के बच्चे से।
निर्निमेषं, क्षण भर मैं उनको रहा देखता-
सहसा मुझे स्मरण हो आया कुछ दिन पहले,
बीज सेम के रोपे थे मैंने आंगन में
और उन्हीं से बौने पौधौं की यह पलटन
मेरी आंखो के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हे नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मन के भावों एवं प्रकृति के सुन्दर रूप का वर्ण

व्याख्या - कवि कहता है कि उन सेम के बीजों से जब पौधे उग आए तो वह ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे छाता लिए खड़े हो या विजय की झंडियाँ उठाए खड़े हों। ऐसा लगता था मानों वह हथेलियाँ खोले थे, नन्हीं सी, प्यारी सी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वो आनन्द से भरे हो और पंख मारकर उड़ने को तैयार हो। वह ऐसे लगते थे जैसे चिड़िया के बच्चे अण्डे तोड़कर बाहर निकलते है उसी प्रकार वह हरे-भरे बाहर निकले सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। पलभर मैं उनको एकटक (बिना पलके झपकाए) देखता रहा। अचानक मुझे याद आ गया कि कुछ दिन पहले तो मैंने सेम के बीज बोए थे यह तो पौधों की सेना उन्हीं बीजों से निकली है जो मेरी आँखों के सामने गर्व से खड़ी हैं जो नन्हें पैरों को पटक-पटक कर बढ़ती जा रही है भाव उन नन्हें पौधों को देखकर कवि के मन में बड़ी प्रसन्नता का भाव था।

The poet says that when the plants grew from those bean seeds, they looked as if they were standing with an umbrella or holding flags of victory. It seemed as if he had opened his palms, small and lovely. It seemed as if he was full of joy and ready to fly away by flapping his wings. He looked like a baby bird coming out of an egg, in the same way he looked green and beautiful after coming out. I kept staring at him (without blinking) for a moment. Suddenly I remembered that a few days ago I sowed bean seeds.

तबसे उनको रहा देखता धीरे धीरे
अनगिनती पत्तों से लद भर गयी झाड़ियां
हरे भरे टंग गये कई मखमली चन्दोवे
बेलें फैल गई बल खा, आंगन में लहरा
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे हरे सौ झरने फूट ऊपर को
मैं अवाक रह गया वंश कैसे बढ़ता है
छोटे तारों से छितरे, फूलों के छींटे,
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर,
सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि मैं उन सेम के बीजों की लताओं को देखता रहा धीरे-धीरे वह अगिनत पत्तों से लद गए और झाड़ियों से भर गए और उस पर कई मखमली हरी-भरी शमियाने टँग गए मानो तम्बू ताना हो। तब ऑगन में लहराकर बल आकर कई बेलें फैलने लगी। वह बाड़े की फट्टियों की दीवार के सहारे से बढ़ने । ऐसा प्रतीत होता था मानो हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े हों। मैं हैरान होकर खड़ा लगी। सोचता रहा कि यह वंश कैसे बढ़ता जा रहा है मानो तारों से छितरे और फूलों के छींटे हों वह श्याम रंग की लताएँ निरन्तर लहरों की तरह बढ़ती जा रही थी सुन्दर लग रही श्रीमानों अमावस के आकाश में वह मोतियों के समान चमक रही हो भाव प्रकृति किस प्रकार विकसित एवं पलवित होती है किस प्रकार सुन्दरता को ग्रहण करती है यह देखकर कवि आश्चर्यचकित था।

The poet says that I kept looking at the vines of those bean seeds, gradually they became laden with innumerable leaves and filled with bushes and many velvety green tents were hung on them as if they were a tent. Then, due to the force of waving in the oven, many vines started spreading. He grew with the support of the slatted wall of the enclosure. It seemed as if a hundred green waterfalls had burst forth. I stood there surprised. I kept thinking how this lineage was growing as if it was scattered by the stars and sprinkled with flowers. Those dark colored vines were continuously growing like waves, beautiful.

ओह समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटी,
कितनी सारी फलियाँ, कितनी सारी फलियाँ,
यह धरती कितना देती है, धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को,
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को,
बचपन में छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के विकसित होने के रूप का वर्णन किया है कि धरती तो देने वाली है।

व्याख्या - कवि कहते हैं कि कुछ समय पर उसमें कई कलियाँ उग आई, कितनी सारी फलियाँ उस पर लगी तब कवि को महसूस हुआ कि धरती माता तो कितना देती है वह तो दाता है वह तो हम पुत्रों को देने वाली है मैं तो उसे समझ नहीं पाया था इसी कारण बचपन में लालसा में पड़कर लोभवश मैंने अपने स्वार्थ के कारण धरती में पैसे बो दिए थे कि पैसों के पेड़ उग आऐगें परन्तु मैं नहीं जानता था कि हम जैसा बोऐगें वैसा ही प्राप्त करेंगे।

The poet says that at some time many buds grew on it, so many pods grew on it, then the poet realized that Mother Earth gives so much, she is a giver, she is going to give it to us sons, I was not able to understand it. That's why in my childhood, out of greed and selfishness, I had sown money in the earth in the hope that money trees would grow, but I did not know that we would get what we sow.

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसले,
मानवता की जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ,
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे ।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने धरती की ऊपजाऊ शक्ति के माध्यम् से मानवता का संदेश दिया है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि यह धरती रत्नों को जन्म देने वाली है यह मैं अब समझ सका हूँ हमें इस धरती में समानता के दाने बोने होंगे, सच्ची क्षमता के. मानव की ममता के दाने बोने होंगे भाव जिस प्रकार हम धरती में जो बोते हैं हमें वही प्राप्त होता है उसी प्रकार यदि आप समानता, सामर्थ्य, ममता के भाव रखेगें तो वही भाव आपको भी प्राप्त होगे। जिससे सुनहरी फसलें उगेगीं। मानवता का प्रसार हो सके, चारों दिशाओं में प्रसन्नता का भाव हो। क्योंकि हम जो बोऐगें वही प्राप्त करेंगे यदि आप अच्छे भाव रखते हैं तो अच्छाई प्राप्त करेगें और बुराई के बदले बुराई प्राप्त करेगे जैसा करोगे वैसा भरोगे।

The poet says that this earth is going to give birth to gems, I have now understood that we have to sow the seeds of equality and true potential in this earth. We will have to sow the seeds of human love. Just as we get what we sow in the earth, in the same way, if you keep the feelings of equality, strength and love, then you will also get the same feelings. Due to which golden crops will grow. May humanity spread and there may be a feeling of happiness in all directions. Because we will reap what we sow. If you have good intentions then you will receive goodness.

प्रश्न 1:एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए;   1 x10=10

- कवि ने पैसों के कैसे पेड़ उगाने का सोचा था? **प्यारे**
- रुपयों की कैसी फसलें खनकने की कवि को आशा थी? **कलदार मधुर**
- रुपयों का पेड़ उगाकर कवि क्या बनाना चाहते थे?**मोटा सेठ**
- अंकुर न फूटने पपर कवि ने धरती को क्या कहा ? **बंजर**
- अंकुर न फूटने पपर कवि ने मिट्टी को क्या कहा?**बंध्या/बांझ**
- पावड़े बिछाकर कवि का बाल मन किसकी राह देखता रहा? **पैसे के पौधों**
- कवि पैसे के बीज को क्या कहते हैं?**गलत**
- पैसे के बीज को कवि ने कैसे रोपा था? **ममता**
- पैसे के बीज कवि ने किससे सींचा था**? तृष्णा**
- कौतूहलवश कवि ने आँगन में किसके बीज बोए थे? **सेम**
- सेम के बीज कविने किसके नीचे दबा दिए थे? **मिट्टी**
- आँगन के कोने में कवि किसे छोटी छोटी छाता ताने देखा? **नवागत**
- कवि अंकुर रूपी छाते को क्या कहते है ? **विजय पताका**
- नन्ही हथेलियाँ खोले कौन खड़ी हैं?**परियाँ**
- किसके बच्चे मानो पंख मारकर उड़ने को तैयार थे?**चिड़ियाँ**
- सेम की बेल को कवि कैसा चंदोवा कहते हैं? **मखमली**
- सेम की बेल कितनी पत्तियों से लद गई? **अनगिनत**
- सेम के बढ़ते वंश को कवि कासे देखते है? **आवक हो कर**
- कवि ने किसे रत्न प्रसविनी कहा है?**वसुधा**
- कवि के अनुसार किसके दाने बोना है?**समता**
- अहा **धरती कितना देती है कवि नाम क्या है ?सुमित्रानंदन पंत**

समाप्त

हमारे कृषक
रामधारी सिंह "दिनकर"
III sem
BCA/BSc(FAD)
NEP

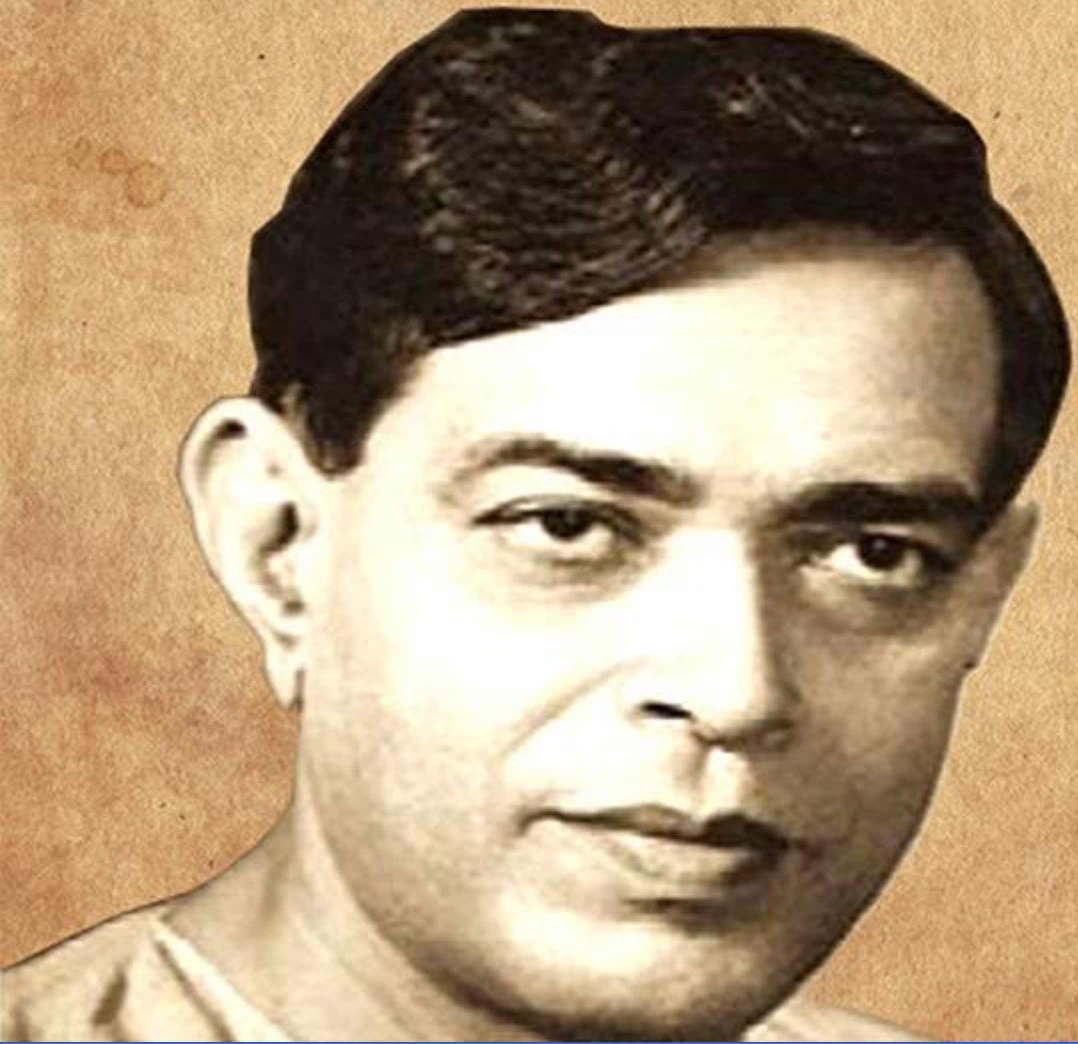

नाम : रामधारी सिंह दिनकर

जन्म : 23 सितम्बर सन् 1908
बिहार, मुंगेर

पिता : बाबु रवि सिंह

माता : मनरूप देवी

मृत्यु : 24 अप्रैल सन् 1974

हमारे कृषक

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं है |

जेठ = बहुत तेज गर्मी का मौसम |

पूस = बहुत कडक ठंड का मौसम |

याम = समय,पहर,वक्त |

मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं है
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है |

भुजा = बाहें |

वसन = वस्त्र, कपड़े |

बैलों के ये बंधू वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं
बंधी जीभ, आँखें विषम गम खा शायद आँसू पीते हैं

बंधू = भाई, मित्र |

विषम = जो कभी न मिलें |

गम = दुख

पर शिशु का क्या, सीख न पाया अभी जो आँसू पीना
चूस-चूस सूखा स्तन माँ का, सो जाता रो-विलप नगीना

विलप = दुखी हो कर |

नगीना = अमूल्य रत्न

विवश देखती माँ आँचल से नन्ही तड़प उड़ जाती
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती |

विवश = लाचार, मजबूर |

वज्र = पत्थर |

कविता का सार:-

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है ।
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं ।।

सारांश:

हमारे देश की कृषि तथा किसानों की दुर्दशा के बारे में दिनकर जी इस प्रकार बताते हैं कि चाहे जेठ हो या पूस अर्थात् जेठ के चिलचिलाती धूप के समय हो या पूस की कड़कड़ाती हुई ठंड हो हमारे देश के किसानों को किसी भी समय आराम नहीं है ।

जल्लाती हुई धूप में भी उन्हें अपने खेतों की रखवाली करनी पड़ती है, काम करना पड़ता है । वहाँ पर उसी तरह ठंड में भी उन्हें अपने पशुओं को देखना पड़ता है और रात भर उन्हें उसकी रखवाली करनी पड़ती है ।

किसान अपने साथी बैलों से हमेशा साथ बनाकर रखता है। उन दोनों का संघ हमेशा बना रहता है । किसान अपने साथी बैलों के साथ निरंतर खेती के कामों में लगा ही रहता है । उसे आराम करने के लिए ऐसा कोई भी समय मिलता ही नहीं है ।

मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं।
है वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं ।।

सारांश:-

किसान का जीवन भी एक सामान्य व्यक्ति के जैसे ही है उसके मुख में भी जीभ है उसे भी स्वादपूर्ण खाना खाने की इच्छा रहती है और यह सब प्राप्त करने के लिए उसके भुजाओं में शक्ति है उसके हाथों में ताकत है । इन सब के बावजूद भी वह सुकून का जीवन नहीं जी पाता ।

वह एक शक्तिशाली व्यक्ति होते हुए भी सुख प्राप्त नहीं कर पता है क्योंकि वह एक किसान हैं और किसान की जीवन बहुत ही दयनीय है हर समय काम करता है दूसरों को भोजन कराता है दूसरों के लिए

अन्नदाता है लेकिन उसके जीभ के लिए स्वादिष्ठ खाना तक वह हासिल नहीं कर पाता है और वह वस्त्र भी अच्छा सा नहीं पहन सकता है ।

किसानों के पास अपनी शरीर ढकने के लिए ढंग सा कपड़ा नहीं होता अति पुराने तार-तार कपड़ों में वह हमेशा दिखाई देता है । पेट भर खाने की तो वह दूर की बात है, सूखी रोटी तक उन्हें सुबह-शाम नसीब नहीं होती है ।

बैलों के ये बंधू वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं ।
बंधी जीभ,आँखें विषम गम खा शायद आँसू पीते हैं ।।

सारांश :

एक किसान के लिए बैलों के बिना रहना एक असंभव सी बात है । बैल और किसान, किसान और बैल दोनों का एक अटूट संबंध है । एक किसान बिना बैल के अपना जीवन नहीं जी सकता और बैल को भी एक किसान के यहाँ छत्रछाया में ही रहना है । यह दोनों एक दूसरे के बंधु है और न जाने इन दोनों का जीवन वर्ष भर कैसे बीत जाता है पता ही नहीं चलता बैल भी काम पर ज्यादा ध्यान देता है । भोजन पर कम ध्यान देता है ।

किसान भी ऐसा ही जीवन बिता रहा है उसे स्वादिष्ट खाना प्राप्त न होने के कारण से अपने जीभ तथा इच्छाओं को बांधकर रखा हुआ है। उसकी आँखों में अनेकों सपने हैं लेकिन वह सब सपने कभी पूरे नहीं होते विषम ही रहते हैं अर्थात कभी भी नहीं मिलते हैं । वे सपने पूरे न होने पर दुख के आँसू पीकर चुप रह जाते हैं।

पर शिशु का क्या, सीख न पाया अभी जो आँसू पीना। चूस चूस सूखा स्तन माँ का, सो जाता रो-विलप नगीना।।

सारांश:

किसानों का शिशु जो अभी बहुत छोटा है । वह अभी भी दुख के आँसू पीना नहीं सीखा है । दुख दर्द क्या होता है वह उससे अनजान ही हैं । इतना छोटा है कि वह अभी भी अपनी माँ का दूध पीता है और वह माँ जो किसान की पत्नी है वह इतना

कब्र-कब्र में अबोध बालकों की भूखी हड्डी रोती है
दूध-दूध की कदम-कदम पर सारी रात होती है |

अबोध = नादान |

कब्र = शव को दफ़नाने हेतु खोदा गया गड्ढा।

दूध-दूध औ वत्स मंदिरों में बहरे पाषान यहाँ है
दूध-दूध तारे बोलो इन बच्चों के भगवान कहाँ हैं |

वत्स = बेटा, पुत्र |

पाषाण = पत्थर

दूध-दूध गंगा तू ही अपनी पानी को दूध बना दे
दूध-दूध उफ कोई है तो इन भूखे मुर्दों को जरा मना दे

गंगा = पवित्र नदी |

मुरदों = मरे, मृत |

दूध-दूध दुनिया सोती है लाऊँ दूध कहाँ किस घर से
दूध-दूध हे देव गगन के कुछ बूँदें टपका अम्बर से

देव = भगवान |

गगन, अम्बर = आकाश, आसमान

हटो व्योम के, मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं
दूध-दूध हे वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं

व्योम = अंतरिक्ष, आकाश |

मेघ पंथ = बादलों के रास्ते |

कमजोर है उसका शरीर भूख के कारण सूख गया है और उसके स्तनों में बच्चे के लिए दूध पिलानी के लिए दूध तक नहीं है वह छोटा बच्चा यह नहीं समझ पाता है अपनी माँ का सूखा स्तन से ही दूध पीने के लिए कोशिश करते हुए रो-रोकर सो जाता है वह तो माँ और पिता के लिए आँखों का तारा है । लेकिन माता और पिता दोनों विवश है उसकी इच्छा वे पूरा नहीं कर पाते हैं ।

विवश देखती माँ आँचल से नन्ही तड़प उड़ जाती।
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती ।।

सारांश:

किसान की पत्नी भी असहायक है । वह अपने बच्चे को दूध नहीं पिला पाती है क्योंकि वह कमजोर है । अपने आँचल की होड़ में से देखती है । नन्हा बच्चा किस तरह मचल रहा है दूध पीने के लिए अपना पेट भरने के लिए लेकिन उसके स्तनों में दूध नहीं है और अगर उस विवश माता का बस चलता तो अपना खून पिलाकर बच्चे का पेट भर देती और उसकी पत्थर जैसी छाती फट जाती लेकिन यह असंभव है । माँ मजबूर है आँचल की ओर से नन्हे बच्चे की तड़प देखती है और चुप रह जाती है ।

कब्र-कब्र में अबोध बालकों की भूखी हड्डी रोती है ।
दूध-दूध की कदम-कदम पर सारी रात होती है ।।

सारांश:

यह स्थिति सिर्फ एक किसान की नहीं है। बल्कि भारत में स्थित सभी किसानों की यही हालत है । उनके छोटे-छोटे जो अबोध शिशु है, बालक है जो दूध पीकर ही पड़े होते हैं वे दूध के अभाव में मर जाते हैं और उनके कब्र में उनके शरीर की हड्डियाँ दूध के लिए रोती रहती है दूध के लिए सारी रात तरस तरस के रोते हुए ही बीत जाती है और एक दिन दूध के अभाव में ही मर जाते हैं ।

दूध-दूध औ वत्स मंदिरों में बहरे पाषान यहाँ है ।
दूध-दूध तारे बोलो इन बच्चों के भगवान कहाँ हैं ।

सारांश:

कवि प्रस्तुत पक्तियों में अमीर लोग तथा लाचार

किसानों के बीच की परिस्थिति के बारे में कह रहे है। एक तरफ बड़े-बड़े आलीशान मकान है मंदिर है लेकिन उसमें रहने वाले लोग दूध के लिए रोने वाले बच्चों की चीत्कार सुनकर भी बहरे होने का नाटक करते है, उनका पत्थर दिल है। वे इन छोटे-छोटे बालकों की इच्छाओं को न समझ पाते हैं और न ही इनके इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं।

कवि समाज में स्थित लोगों से निराश होकर तारों से ही बात करते हैं। हे तारे तुम ही बताओ जो यह छोटे-छोटे बच्चे है वह दूध के लिए जो तरस रहे हैं इनकी पुकार सुनने वाले इनकी प्रार्थना सुनने वाले भगवान कहाँ रहते हैं तुम ही बताओ इस प्रकार कवि ने प्रकृति से भी प्रार्थना की है।

दूध-दूध गंगा तू ही अपनी पानी को दूध बना दे।
दूध-दूध उफ कोई है तो इन भूखे मुर्दों को जरा मना दे ।।

सारांश:

हर तरफ से दूध के लिए रोने वाले बच्चों को देखकर कवि गंगा मैया से प्रार्थना करते हैं कि हे गंगा मैया तुम्हीं अपनी पानी को दूध बना दो और इन बच्चों को दूध पिला दो। चारों तरफ से अपने पेट भरने के लिए इस दूध के लिए तकलीफ में बच्चे मुर्दे बनकर घूम रहे हैं जैसे उनमें जान ही नहीं है। हे गंगा मैया अपनी पानी को दूध बनाकर तुम्हीं पिला दो इन छोटे नन्हे नादान बालकों को तुम ही तोड़ा सा सांत्वना दे दो।

दुनिया सोती है लाऊँ दूध कहाँ किस घर से।
दूध-दूध हे देव गगन के कुछ बूँदें टपका अम्बर से ।।

सारांश:

किसानों के बच्चों की भूख मिटाने के लिए कवि आकाश से प्रार्थना करते हैं। चारों तरफ दूध-दूध कह कर प्रार्थना कर रहे हैं और भूख के कारण बच्चे रो रहे हैं दूध के बिना मर रहे हैं। लेकिन इस दुनिया में वास करने वाले जो महान लोग है, वे सोने के जैसे नाटक करते हुए इन सब चीजों से अनजान बने है। उन्हें दूसरों के दुख दर्द से कोई परेशानी नहीं है कोई लेना देना नहीं है अपनी दुनिया में मस्त है।

कवि दुनिया के लोगों से नाराज़ होते हुए उन बच्चों से कहते है कि सब लोग सोए हुए लोगों के जैसे नाटक कर रहे हैं तो तुम्हारे लिए मैं किस घर में जाकर दूध मांगू और कौन इस आवश्यकता की पूर्ति करेगा। हे गगन तुम ही कुछ करो और आकाश से अंबर से दूध टपका देने की विनती करते है। तुम्हीं कुछ कर सकते हो इस धरती पर मनुष्य तो पत्थर दिल है। इसलिए कवि ने गगन (आकाश) से इन किसान के बच्चों जो नादान है उन के लिए दूध की माँग की है।

हटो व्योम के, मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं।
दूध-दूध हे वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।।

सारांश:

समाज से, दुनिया से, दुनिया वालों से कवि नाराज होते हुए अपने अंतिम पंक्ति में इस तरह वे प्रकृति से स्वयं कहते हैं कि आकाश के मार्ग से हट जाओ और बादलों के रास्ते से मैं स्वयं स्वर्ग लोक जाकर दूध लूट कर लेकर आऊंगा। जो छोटे-छोटे बालक आप लोग दूध के लिए तरस रहे हो वह दूध में आप लोगों के लिए लेकर आऊंगा। मैं स्वर्ग जाकर वहाँ से आप लोगों के लिए दूध लूट कर लेकर आऊंगा।

किसानों के बच्चों को कवि स्वयं धैर्य धारण करने के लिए कह रहे हैं कि वे स्वयं स्वर्ग लोक जाकर दूध लूट कर लेकर आयेंगे और उन्हें पेट भर दूध पीने के लिए देंगे। हे कृषकों के बालक आप शांत रहो मैं आप लोगों के लिए कुछ न कुछ करूंगा। आप लोग अपनी भूख मिटा सकते हो।

पहली कविता है 'हमारे कृषक'। किसानों का मुद्दा इस देश में कभी पुराना नहीं हुआ और इस दौर में किसानों की बढ़ रहीं आत्महत्याएं, उनके द्वारा किए जा रहे आंदोलन हमें सोचने को मजबूर करते हैं कि यह देश किस तरह 'कृषि प्रधान देश' होने का दावा करता है। यह कविता किसानों के दर्द को दर्ज करती है।

The first poem is 'Our Farmers'. The issue of farmers has never become old in this country and in this era, the increasing suicides of farmers and the movements being carried out by them force us to think as to how this country claims to be an 'agricultural country'. This poem records the pain of the farmers.

कवि कहते हैं कि किसान विश्व का पालक एवं अन्नदाता है । लेकिन आज वह स्वयं मूलभूत सुविधाओं से वंचित होकर हाथों में संतोष की तलवार लिए हुए अपने जीवन में तेज गति से आगे बढ़ता चला जा रहा है, अर्थात जीवन में आनेवाली विपरीत व कठिन परिस्थिति में भी वह संतुष्ट रहने का प्रयत्न करना है। दुनिया में जब मधुमास यानी वसंत ऋतु छाई रहती है, अर्थात लोगों के जीवन में सर्वत्र संपन्नता होती है; तब किसान पतझड़ की छाया में ही अपना जीवन – यापन करता है, हमेशा दुखी ही होता है । परंतु उसकी दीनता भी अभिमान के समान है । इसलिए ऐसे स्वाभिमानी किसान का कवि सम्मान करना चाहता है और उसे उसकी खोई प्रतिष्ठा फिर से स्थापित करने हेतु कवि उस पर गीत गाना चाहता है।

The poet says that the farmer is the nurturer and provider of food to the world. But today, being deprived of basic facilities, he himself is moving forward in his life at a fast pace with the sword of satisfaction in his hands, that is, he has to try to remain satisfied even in the adverse and difficult situations that come in life. When Madhumas i.e. spring season prevails in the world, it means there is prosperity everywhere in people's lives; Then the farmer lives his life in the shadow of autumn and is always unhappy. But his humility is also like pride.

प्रश्न 1: एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए : 1 x10=10

- जेठ हो या पूस हो किसे आराम नहीं है ? **कृषक**
- किसानों का साथ किससे कभी नहीं छूटता ? **बैलों**
- कवि के किसे किसानों का बंधु कहा है? **बैलों**
- कृषकों की भुजा मे शक्ति होकर भी जीवन में क्या नहीं है? **सुख**
- अभी आँसू पीना कौन नहीं सिख पाया है? **शिशु**
- अबोध बालकों की भूखी हड्डी कहाँ रोटी है ? **कब्र**
- कर मे किसकी हड्डी रोटी है / **अबोध बालकों**
- कवि ने मंदिरों में रहने वालों को क्या कहा है? **बहरे पाषान**
- बच्चों के भगवान के विषय में कवि किससे पूछते हैं? **तारे**
- कवि ने किसके पानी को दूध बना देने को कहा है? **गंगा**

- कवि ने गंगा के पानी को क्या बना देने को कहा है? **दूध**
- किसके लिए गंगा के पानी को दूध बना देने की बात कही है ? **बच्चों**
- किसके बच्चों के लिए कवि दूध की व्यवस्था करने की बात करते हैं? **कृषक**
- कवि कौन से रास्ते से स्वर्ग लूटने की बात करते हैं?**मेघ**
- कवि स्वर्ग से क्या लूटना चाहते हैं?**दूध**
- कवि भगवान से कहाँ से दूध टपका देने को कहते हैं? **अम्बर**
- **'हमारे कृषक'** कविता के कवि का नाम क्या है ? **राधारी सिंह 'दिनकर'**

प्रश्न 4: टिप्पणी लिखिए : कोई एक 1 x5=5

हमारे कृषक

यह शीर्षक हमारी पाठ्य पुस्तक **'काव्यानन्द'** की कविता **'हमारे कृषक'**, कवि रामधारी सिंह दिनकर है |

हमारे कृषक की यह गाथा हम सबको जाननी चाहिए क्योंकि उसके परिश्रम पर ही हमारा जीवन निर्भर है । वायु और जल के बाद मनुष्य को उदर पूर्ति के लिए अन्न और तन ढकने के लिए वस्त्र की मूलभूत आवश्यकता है | यदि ये दोनों वस्तुएं नहीं होतीं तो शायद मनुष्य का अस्तित्व नहीं होता और यदि होता भी तो वह बुरा होता |

आज जब हम अन्न और वस्त्र का सेवन करते हैं तो हमारी मन में यह सोच तक नहीं आता कि ये अन्न के दाने हमारे लिए कौन पैदा कर रहा है, यह तन ढकने के लिए सूत कहां से आ रहा है ? यह सब हमें देता है कृषक |

सबसे बुरा तो यह है कि किसान के छो[illegible] दूध का सेवन नहीं कर पाते है |

समाप्त

शबरी
नरेश मेहता
NEP
III sem BCA/BSc(FAD)
काव्यानन्द
Annotation Summary
&
Qu & Ans
BANGALORE UNIVERSITY

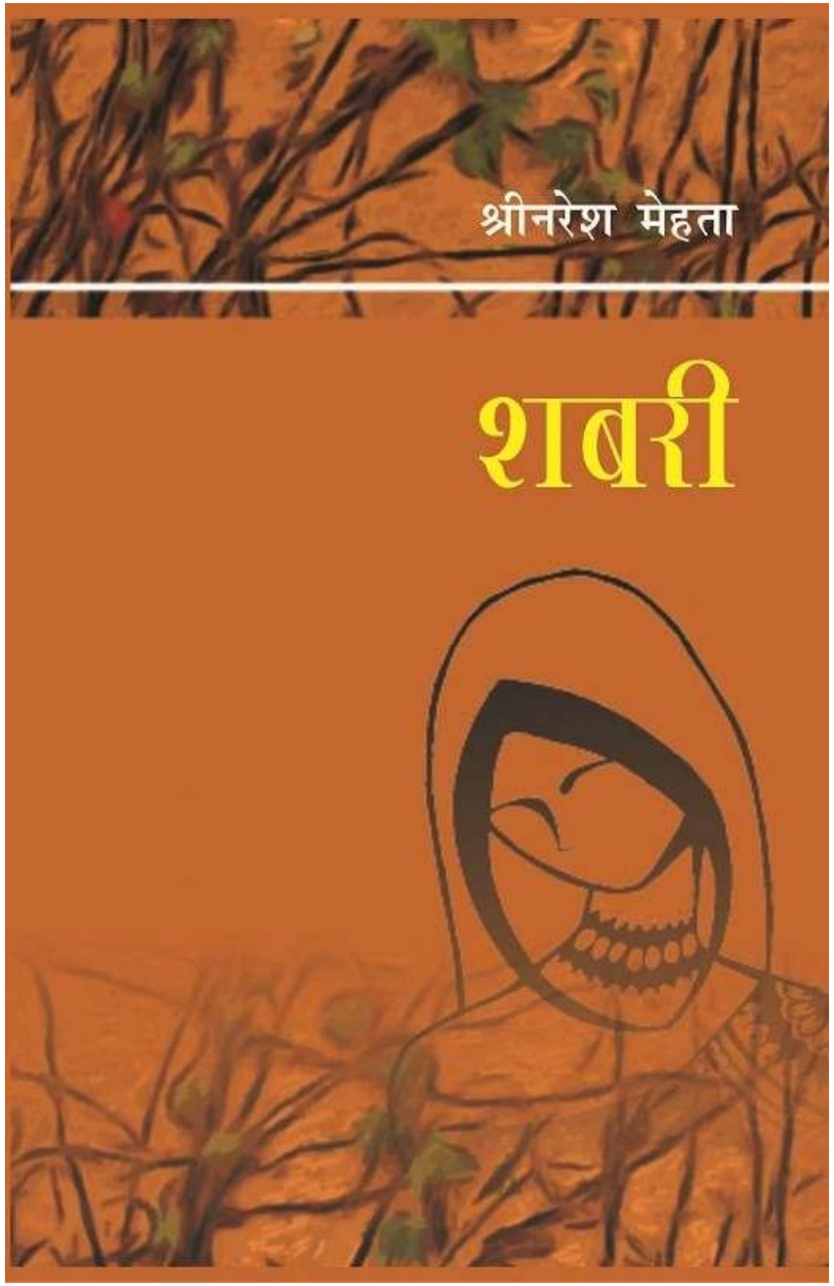
श्रीनरेश मेहता
शबरी

नरेश मेहता
जन्म -15 फरवरी सन 1922 को
जन्म स्थान -शाजापुर (मध्य प्रदेश)
पिता - पंडित बिहारीलाल
रचनाएं - बोलने दो चीड़ को, मेरा समर्पित एकांत उत्सव, तुम मेरा मोन हो, संशय की एक रात
मृत्यु - 22 नवंबर सन 2000

शबरी

भील आदिवासी कबीले के मुखिया अज के घर बेटी पैदा हुई थी। उसका एक नाम श्रमणा और दूसरा नाम शबरी रखा गया। शबरी की मां इन्दुमति उसे खूब प्यार करती थी। बचपन से ही शबरी पशु-पक्षियों की भाषा समझकर उनसे बातें करती और जब सबरी की मां उसे देखती, तो कुछ समझ नहीं पाती थी।शबरी के लिए भी यह सब कठिन था इसलिए सब को छोड़कर वह आधी रात में पम्पसर वन मे चली जाती है और मतंग ऋषि की शरण में आश्रय लेती है।

भूली भटकी शूद्र जाति की एक नारी जा पहुंची मतंग ऋषि की कुटिया पर। नाम था शबरी। उसे सहारे की जरूरत थी। उसे छत चाहिए थी। उसे पेट पालने के लिए नियमित थोड़ा अन्न व जल चाहिए था।

ऋषि द्वार पर मिल गए। शबरी ने अनुनय विनय करते हुए शरण मांगी। वह कोई घड़ी ही ऐसी थी कि मतंग ऋषि ने उसकी जाति जानते हुए भी उसे शरण दे दी। बेचारी शबरी को सुरक्षित सहारा मिल गया।

शबरी का आश्रम में आना और अपने उध्दार की कोशिश करना गांधी जी की शिक्षा का एक हिस्सा है । कवि मेहता जी ने आत्मा की उन्नति का प्रश्न उपस्थित कर यह बताया है कि सभी मानव अपने आत्मोन्नति की कोशिश कर सकते हैं चाहे वे अत्यंज ही क्यों न हो सभी को समान अधिकार हैं ।

शबरी खण्ड—काव्य में कवि नरे ा मेहता ने त्रेता युग की व्यथामयी दीना—नारी शबरी की आध्यात्मिकता चेतना का वर्णन किया है। इस दे ा में जाति वर्ण की दृढ़ व्यवस्था ने बहुत—सी गति ीलता को अवरूद्ध किया है। भूद्र सेवक ही नहीं अस्पृश्य भी समझा जाने लगा है। मूल रूप से मेहता जी ने प्रस्तुत काव्य में जाति—व्यवस्था की विशमता को प्रद ित किया है। संपूर्ण कथा को कवि ने पांच छोटे—छोटे खण्डों में विभक्त किया है। त्रेता, पम्पासर, तपस्या, परीक्षा, दर्शन आदि नाम भाबरी के आत्मिक उन्नति से सम्बद्ध हैं। कवि ने शबरी के उस युग को चित्रित किया है जिस युग में भाबरी का समाज त्रेता में बदल गया था और अरण्य की ग्राम सभ्यता, नगर सभ्यता, में बदल गयी थी। इन्हीं से मिलती—जुलती एक शबर जाती थी, जो मनुश्यता से दूर विंध्य वनों में रहती थी। ऐसी ही भाबर जाति में श्रमणा का जन्म हुआ था, किंतु आरम्भ से ही उसे जघन्य कृत्यों के प्रति घृणा थी। उसे परिवार के लोग हत्यारे लगते थे, जो हमे ाा काले तन पर लंगोटी कसके जीव—हत्या के लिए तैयार रहते थे। न जाने किस जन्म के पुण्य के फलस्वरूप उसके मन में विचार उत्पन्न होते हैं :—

शबरी जब रक्त से भीगे हथियार नदी में साफ करती थी, तब वह एकान्त में प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर सोचा करती थी कि ई वर ने कितनी मधुर और सुन्दर वस्तुएं बनायी हैं, परंतु मनुश्य कितना पापी है, जो पाप–कर्म में ही लीन रहता है। श्रमणा नि चय कर लेती है कि इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने से तो प्रभु की आराधना करना ही श्रेश्ठ है। अन्ततोगत्वा शबरी अध्यात्म–पिपासा लेकर पारिवारिक स्नेह–तंतुओं को तोड़कर पम्पासर वन में ऋशि मतंग के आश्रम में पहुंच जाती है। ठाकुर–प्रतिमा के सम्मुख तन्मय भाव से कीर्तन करना और सभी कर्मों को प्रभु का श्रृंगार समझ कर सम्पादित करना उसका नित्य–नियम था। उसे प्रकृति के सुन्दर और परम सत्ता का आभास मिलता है। वह यह समझती है कि इस सृश्टि का कोई निगूढ़ अर्थ अवश्य है–

Introduction

शबरी श्री नरेश मेहता द्वारा लिखा गया एक खंड काव्य है और इसे पांच भागों में बांटा गया है। 1. त्रेता2. पंपासर्3. तपस्या4. परीक्षा5. दर्शनशबरी त्रेता युग की एक दिन -हीन गरीब नीच जाति की आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की कहानी है । हिंसा ,लूटपाट,हत्या जैसे जीवन से दुखी होकर एक दिन शबरी अपने पति और बच्चों को गहरी निंद्रा में सोई छोड़ पंपासर् की ओर चल पड़ी। पंपासर का नाम उसने पहले भी सुन रखा था कि वह ऋषि मुनियों की पावन धरती है। वहां पर ऋषि मुनियों के बहुत आश्रम में और वहीं पर मेरा जीवन सफल होगा शबरी के पंपासर पहुंचने के बाद की कहानी इस प्रकार है।

1.शाल और सागौन वनों को पार किया
शबरी ने सुन रखा था नाम कभी पंपा सर का
शबरी ने पंपासर में बड़े-बड़े ऋषि मुनियों के हैं
आश्रम ज्ञान- ध्यान, तप - आराधना के तीर्थरूप है
आश्रम इन ऋषि – मुनियों में मतंग ऋषि थे
सबसे तेजस्वी दूर देश से सुनने आते वाणी जो ओजस्वी ।
पंपापुर में पहुंच, लगा आश्रम में कैसे जाएं?
शबर जाति की स्त्री कैसे ऋषि के दर्शन पाये ?
प्रात:काल हुआ ही था, सब स्नान – ध्यान में रत
थे यज्ञ आदि के लिए बटुक - जन लकड़ी बीन रहे थे।
कोई क्यारी छांट रहा था सींच रहा जल कोई
दुही जा चुकी थी गायें सब रंभा रही थी कोई ॥

व्याख्या:- साल और सगौन के वनों को पार कर शबरी पंपासर् में पहुंची । शबरी ने पंपासर् का नाम पहले ही सुन रखा था ।पंपासर् में बड़े-बड़े ऋषि मुनियों के आश्रम थे ,जो उनके लिए ज्ञान तप आराधना एवं तीर्थ रूप थे । मतंग ऋषि सभी ऋषि मुनियों में श्रेष्ठ ऋषि थे और उनकी ओजस्वी वाणी सुनने दूर देश से लोग आते थे। पंपासर् मैं पहुंच नीच जाति के शबरी ने सोचा कि मैं आश्रम में कैसे जाऊं और कैसे ऋषि के दर्शन पाऊं? सुबह सब लोग स्नान ध्यान में लगे थे । और कोई कुछ गाय रंभा रही थी। लोग इधर –उधर अपने काम करते घूम रहे थे।

2.जलकलशी ले ऋषि-कन्याएं पोखर आती जाती थी

भीगी एक वसन में वे सब, धुले चरण दर चलती

यज्ञ- वेदियां सुलग चुकी थीं वेद पाठ था जारी

कितनी दिव्य और भव्य थी शांति यहां की सारी।

पहुंची वह मतंग ऋषि - आश्रम में यज्ञ - धूम था

पावन दिव्य-गंध से युक्त हवा सामगान मन-भावनजाकर स्नान किया पोखर में
हो पवित्र तन मन से, बैठ गई आश्रम- फाटक पर

सार्थक हो दर्शन सेशांति पाठ हो चुका,

मतंग तब मंडप से उठ आये,देखा फाटक पर स्त्री को

हो थोड़ा सकुचायेIपूछा ऋषि ने तुम कौन ?कौन हो ?

और कहां से आई देखा न तपोवन में पहले क्या नयी-नयी ही आयी? 2

व्याख्या :-बटुक जाति के लोग यज्ञ के लिए लड़कियां तोड़ रहे थे कोई क्यारी लग रहा था तो कोई पानी खींच रहा था कोई तो कोई गाय दुह रहा था । तो कुछ गए रंभा रही थी। एक वस्त्र में लिप्त ऋषि कन्या कलश ले तालाब से पानी लाने आ- जा रही थी। शबरी तालाब में स्नान कर तन मन से पवित्र आश्रम की फाटक पर दर्शन के अभिलाष में बैठ गई। मतंग ऋषि शांति पाठ खत्म कर मंडप से बाहर आए और फाटक पर बैठी स्त्री को देखकर संकुचाय। मतंग ऋषि ने जब शबरी को देखा तो उससे पूछा- तुम कौन हो? कहां से आई हो ?इसके पहले तो तुम्हें कभी नहीं देखा। क्या आज ही आई हो?

3.ऋषि की जिज्ञासा- वाणी सुन भर आये शबरी के लोचन,
कैसे बताएं अन्त्यज है शबर जाति की: दुख मोचन ।
चौंके मतंग, वह समझ गये कीचड़ में कमल खिला है यह।
होगी अछूत, पर जाने किन जन्मों का पुण्य खिला है यह।
चुप देख पुनः शबरी बोली चिंता ना करें मेरे कारण,
मैं किसी पेड़ के नीचे रहकर कर लूंगी जीवन-यापन।
मैं चाह रही, केवल प्रभु के श्री चरणों की सेवा करना,
मैं कर लूंगी संतोष मिले यदि गायों की सेवा करना।

प्रभु के श्री मुख से प्रवचन सुन भवसागर तर जाऊंगी,
पापी हूं, गुरु की कृपा हुई तो
हरि गुण गा तर जाऊंगी। मैं पापी हूं, हूं हत भागी
इस भवसागर से पार करो प्रभु – चरणों में ही भक्ति
अटल मुझ को दासी स्वीकार करो।
विश्वास हो गया ऋषि को शबरी निश्चय पुण्यात्मा
जाने किन कर्मों के हित थी भटक गई यह आत्मा ।
जब प्रभु ने ही भेजा वे पथ भी दिखलाएंगे,
है दीनबंधु, निश्चय इस दीना को अपनाएंगे

व्याख्या:- ऋषि की वाणी सुन शबरी की आंखें भर आई, कि मैं नीच जाति की दुखी नारी हूं कैसे कहूं? ऐसा शबरी मन में सोचती है। शबरी के भाव भंगिमा समझ ऋषि चौंक गए और सोचा कि आज कीचड़ में कमल खिला है। भले ही नीच जाति की है लेकिन आज इसके जन्म -जन्मों का पुण्य खिला है । ऋषि को चुप देख शबरी बोली कि आप चिंता ना करें मैं किसी पेड़ के नीचे रहकर जीवन गुजार लूंगी। मैं तो प्रभु के चरणों की सेवा करना चाहती हूं। अगर मुझे गायों की सेवा करने का अवसर मिले तो, मैं उसी में संतुष्ट हो जाऊंगी । प्रतिदिन प्रभु के वचन सुनकर इस भवसागर से पार हो जाऊंगी । मैं दुर्भागी हूं पापी हूं। हे ! भगवान मैं आपके चरणों में आप भक्ति में अटल हूं। शबरी की विनती से ऋषि को विश्वास हो गया कि निश्चय ही एक पूर्ण आत्मा है ना जाने किन कर्म के कारण भटक रही है प्रभु ने इसे यहां का रास्ता दिखाया है और निश्चय ही इस गरीब को अपनाएंगे।

एक अंक के प्रश्न उत्तर:-

1.साल और सघन वनों को पार कर शबरी कहां पहुंची? पंपासर

2. पंपासर क्यों प्रसिद्ध था? ऋषि मुनियों के आश्रम की वजह

3. ऋषि-मुनियों में तेजस्वी ऋषि कौन थे? मतंग ऋषि

4. आश्रम में लकड़ी विनती शबरी को किसने ने देखा? मतंग ऋषि

5. ऋषि कन्याएं जल कलश लेकर कहां से आ रही थी? पोखर

6. आश्रम की शांति कैसी थी? भव्य

7. नहा धोकर सबरी कहां बैठ गई थी? आश्रम के फाटक पर

8. शबरी ने कहा स्नान किया? पोखर में

9. फाटक पर स्त्री को देखकर कौन सकुचाय?

10. ऋषि की जिज्ञासा वाणी सुनकर किसके लोचन भर गए? शबरी

11.शबरी कौन सी जाती बताती है? शबर

12.. कीचड़ में कमल खिला है, मतंग ऋषि ने किसके लिए कहा? शबरी

13.. मतंग ऋषि को चुप देखकर सबरी कहां रह लेने के बाद कहती है? पेड़ के नीचे

14. शबरी मतंग कृषि से किस की सेवा का कार्य मांगती है? गायों की

15. शबरी प्रभु के प्रवचन सुनकर कहां से तर जाने की इच्छा रखती है? भवसागर

16. ऋषि को शबरी के बारे में कैसी आत्मा होने का विश्वास हो गया था? पुण्य आत्मा

- मतंग ऋषि को चुप देखकर शबरी कहाँ रह लेने की बात कहती है ? पेड़ के नीचे
- शबरी कहाँ पर रहकर जीवन यापन करने की बात बोलती है ? पेड़ के नीचे
- शबरी मतंग ऋषि से किसकी सेवा कार्य मांगती है ? गायों
- शबरी प्रभु के प्रवचन सुनकर कहाँ से तर जाने की इच्छा रखती है ? भवसागर
- ऋषि को शबरी के बारे में कशी आत्मा होने का विश्वास हो गया? पुण्यात्मा
- मतंग ऋषि किसे दीनबंधु कहते हैं? भगवान / राम
- शबरी पुण्य आत्मा होकर किसके कारण भटक गई थी?कर्मों
- शबरी कविता के रचनाकार कौन हैं ? मेहता

प्रश्न 2: ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: कोई दो 7 x2=14

जाकर स्नान किया पोखर में , शांति पाठ हो चुका,
हो पवित्र तन - मन से मतंग तब मंडप से उठ आए,
बैठ गई आश्रम फाटक पर , देखा फाटक पर स्त्री को
सार्थक हो दर्शन से , तो थोड़ा सकुचाए |

प्रसंग: काव्यानन्द कविता संकलन मे शबरी कविता से पंक्तियाँ ली गई हैं जिसके कवि नरेश मेहता हैं|

संदर्भ: कवि ने शबरी के विषय में बताया है जब वह मतंग ऋषि के पास आश्रय लेने जाती है |

व्याख्या: शबरी एक अंत्यज जाति की स्त्री है उसे मालूम है कि आश्रम में उसको प्रवेश नहीं है इस लिए अपनी तरफ से वह आश्रम के नियम के अनुसार नहा धोकर स्वच्छ होकर गेट पर बैठ जाति है कि ऋषि के दर्शन मात्र से ही वह सार्थक हो जाएगी| मतंग ऋषि ने शांति पाठ पूरा किया तो उनका ध्यान फाटक की ओर गया और वे किसी औरत को वहाँ बैठा देखकर सकुचाए कि कोई औरत वहाँ क्यों बैठी है अर्थात उन्हें अच्छा नहीं लगा कि उनके आश्रम में औरत का एसा अपमान क्यों हो रहा है कि वह फाटक पर बैठी है |

विशेषता : मतंग ऋषि एक सुलझे विचारों वाले ऋषि थे , उनके आश्रम में हर पवित्र आत्मा को आने की अनुमति थी , वे जाति का भेद नहीं मानते थे और वे इतने सिद्ध पुरुष थे कि व्यक्ति को देखाकर मन की पवित्रता को पहचान लेते थे|और शबरी भी अपनी सीमाओं को समझती थी |

शब्दार्थ: पोखर - तालाब | फाटक - द्वार, गेट | सार्थक - सफल , योग्य |

प्रश्न 4; टिप्पणी लिखिए - कोई एक 5 x 1=5

1.शबरी 2. पंपासर 3. मतंग ऋषि

उत्तर: **मतंग:** यह शीर्षक काव्यानन्द कविता संकलन मे शबरी कविता से लिया गया हैं,कवि नरेश मेहता हैं शबरी श्री राम की परम भक्त थी शबरी का असली नाम “श्रमणा” था, वह भील सामुदाय के शबर जाति से सम्बन्ध रखती थीं इसी कारण कालांतर में उनका नाम शबरी पड़ा ।शबरी को किसी तरह की हिंसा असहनीय थी इसलिए वह अपने परिवार को छोड़कर, साल और सागौन के वनों में पहुँच जाती है | पंपासर में मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँच कर उनसे प्रार्थना करती है कि मुझ जैसी नीच जाति को अगर आश्रम में जगह नहीं मिलेगी तो कोई बात नहीं मैं किसी पेड़ के नीचे रह लूँगी और आपके मुख से प्रवचन सुनकर पवित्र हो जाऊँगी और मुझे गायों की सेवा करने की जिम्मेदारी मिल जाएगी तो भी आपकी कृपया होगी | शबरी की बातें सुनकर मतंग ऋषि समझ जाते हैं कि यह अवश्य पुण्यातमा है कर्मों के कारण भटक गई है और उसे आश्रम में स्थान देते है |

समाप्त